माननीय राज्यपाल, हरियाणा प्रो0 कप्तान सिंह सोलंकी द्वारा 23 अगस्त 2015 को एन0 डी0 आर0 आई0, करनाल के सभागार में आयोजित स्वतंत्रता सेनानी बाबू मूलचंद जैन जन्म शताब्दी समारोह में दिया गया भाषण।

इस आयोजन की अध्यक्षता कर रहे डा0 रामजी सिहं जी, हरियाणा सरकार के दो प्रतिनिधि मंच पर उपस्थित हैं–श्रीमती कविता जैन जी और श्री बख्शीश सिंह जी, करनाल की मेयर रेणु बाला जी, श्री हरिराम जी व अन्य महानुभाव!

आज का आयोजन बहुत ही प्रेरणादायी है और भावुक भी है और भविष्य में हमें कैसा बनना है, क्या करना है इसके लिए बहुत सुन्दर संदेश भी है। मुझे बहुत अच्छा लगा कि इस कार्यक्रम में बहुत बड़ी संख्या में वे महानुभाव उपस्थित हैं जिनका जीवन, जिनका व्यक्तित्व और जिनका अस्तित्व दोनों ही हम सबके लिए अनुकरणीय हैं और प्रेरणा के केन्द्र भी हैं। उन्होंने यहाँ पर आकर श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए जो कुछ बोला है वह आज अगर अपने देश के नौजवानों के लिए और हम सबके लिए खुराक बन जाए तो नैतिकता की दृष्टि से वे लोग और भारतवर्ष कितना समृद्ध हो जाएगा? आप सब साढ़े 11 बजे से पहले से इतनी बड़ी संख्या में यहाँ पर उपस्थित हैं। सामान्यतः जयंती के कार्यक्रम में और इस तरह के कार्यक्रम में इतने लंबे समय तक इतनी बड़ी संख्या में उपस्थिति देखने को मिलती नहीं। अगर कोई नाच–गाने का कार्यक्रम हो तो जगह ही नहीं मिलती, बाहर लाठियाँ चलती हैं। लेकिन ऐसे कार्यक्रम में इतनी बड़ी संख्या और पूरे समय तक बैठे रहना आपकी इस तरह की विनम्र, श्रद्धाभरी श्रद्धांजलि बाबू मूलचन्द जी के लिए निश्चित रूप से एक बहुत बड़े आदर और कृतज्ञता का प्रकटीकरण है।

स्कूल के बच्चों ने कितना सुन्दर यहाँ पर कार्यक्रम किया। उन्होंने देश के बारे में, भारत के बारे में सोचने पर मजबूर किया। एक बात मैने और देखी कि पुरुषों के अलावा जो महिलाएँ यहाँ पर बोलीं वे स्त्री शक्ति का और मातृशक्ति का बहुत बड़ा उदाहरण और संदेश हैं। मैं उन्हें सुनकर बहुत प्रसन्न हुआ। चाहे वे रेणु बाला जी हों, कविता जैन जी हों, शान्ति देवी जी हों या फिर डा0 स्वतंत्र जैन जी हों। ये सब जब बोल रही थीं तो मन को भी बहुत अच्छा लग रहा था और उनका चिंतन उनकी सोच उनके विचार सुनकर पता चल रहा था कि बाबू मूलचन्द जी के प्रति उनके मन में कितना सम्मान है। कृति और आस्था इन दोनों की प्रस्तुति ने तो कमाल ही कर दिया। भगवान ने नाम कृति और आस्था बहुत सुन्दर दिए हैं।

बाबू मूलचन्द जी के जीवन के बारे में आप सब जानते हैं और सबने सुना भी है। मैं उनके जीवन के बारे में कोई बात नहीं बोलूंगा। लेकिन इन दो बेटियों कृति और आस्था ने जो कुछ यहाँ पर कहा है, उस पर जरा विचार करिए। देश में आबादी की कमी नहीं है। आबादी बहुत है। देश में नौजवानों की भी कमी नहीं है। पूरे विश्व के अंदर जितने नौजवान भारत में हैं विश्व में और कहीं नहीं हैं। इसलिए इंडिया को यंग कहा जाता है– यंग इंडिया। भारतवर्ष के अंदर संसाधनों की भी कमी नहीं है। भारतवर्ष की संस्कृति बहुत महान है। और संस्कृति इतनी महान है कि विश्व में कोई भी ऐसा देश नहीं है

जिसमें व्यक्ति भगवान का साक्षातकार कर सकता हो, भगवान से मिलकर बात कर सकता हो। यह वह देश है जिसमें व्यक्ति नर के रूप में पैदा होता है और नारायण बन जाता है।

डा0 रामजी सिंह जी एक श्लोक कह रहे थे–एतत् देश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः। स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः।। इस पृथ्वी पर मनुष्य को सबसे पहले चरित्र की शिक्षा किसने दी? मनुष्य और पशु में अंतर क्या है? जो मनुष्य को चाहिए वह पशु को भी चाहिए। भूख मनुष्य को भी लगती है, पशु को भी लगती है। परिश्रम के बाद थकान दोनों को आती है। नींद दोनों को चाहिए। भय भी दोनों को लगता है। दोनों में फर्क क्या है? फर्क केवल इतना ही है कि मनुष्य का चरित्र होता है, पशु का चरित्र नहीं होता। जिसका चरित्र नहीं होता वह पशु होता है, क्योंकि भगवान ने उसे वह दिया ही नहीं। एकश्लोक में कहा गया है न कि धर्मो हि तेषां अधिको विशेषः धर्मेण हीनाः पशुभिस् समानाः। यह धर्म की जो भावना है, एक–दूसरे के प्रति सम्मान, एक–दूसरे के प्रति आत्मीयता, एक–दूसरे के प्रति त्याग, मिलकर के रहना, समानता, बंधुता, भ्रातृत्व ये सारी बातें सिर्फ मनुष्य के अंदर होती हैं। और इसके लिए अपना भारत सर्वश्रेष्ठ है।

जब मैं भारत के बारे में ये सब बातें कह रहा हूँ तो एक दूसरा पक्ष उजागर होता है कि इतना बड़ा भारत, इतना श्रेष्ठ भारत, इतना चरित्रवान भारत, संसाधनयुक्त भारत, फिर भारत में कमी क्या है? भारत एक हजार साल तक गुलाम क्यों रहा? क्या कमी है भारत के अन्दर? 1893 में जब स्वामी विवेकानन्द अमेरिका के शिकागो में जाकर भाषण देते हैं और पूरी दुनिया के धर्मगुरूओं को नतमस्तक कर देते हैं, उस सभा में उपस्थित सब धर्मगुरू आश्चर्य से पूछते हैं कि यह संत आया कहाँ से है? स्वामी विवेकानन्द जी कहाँ से आए हैं? और जब उन्हें यह पता चलता है कि स्वामी विवेकानन्द जी उस देश से आए हैं जो देश गुलाम है तो वे सब कहते हैं कि इतना महान देश, जिसका विचार इतना अच्छा है, जिसका संदेश इतना अच्छा है, वह देश गुलाम क्यों है? और वह स्थिति अभी भी सुधरी नहीं है।

वैसे तो डॉ0 रामजी सिहं जी को सुनने के पश्चात मुझे कुछ बोलने की आवश्यकता नहीं थी। और भी अन्य जो वक्ता बोले हैं बहुत सुंदर बोले हैं परन्तु इन्होंने तो उपसंहार व समापन ही कर दिया। लेकिन मुझे तो सिर्फ दो ही बातें कहनी हैं कि वे जो दो बेटियों आई थीं कृति और आस्था, इनका जरा अनुसरण करें। कृति सबसे बड़ी चीज है जो मनुष्य को दूसरों से अलग करती है। कृति राम की भी थी। कृति रावण की भी थी। राम और रावण को अलग क्या करता है? रावण तो बहुत विद्वान था। उत्तम कुल का था। वह जादू–टोना जानता था। वह मायावी था। वह शक्तिशाली था। और जिस सोने के लिए आप पागल हुए घूम रहे हैं, उसके तो मकान सोने के थे। क्या नहीं था रावण के पास? लेकिन रावण मानव नहीं था। रावण दानव था। दानव क्यों था? क्योंकि उसकी कृति दानव की थी।

आज अपने देश की सबसे बड़ी समस्या यही है। हमारा देश किसी चीज में पीछे नहीं है। अगर पीछे है तो यह इस देश में रहने वाले लोगों की कृति की वजह से है। कृति सुधारने की जरूरत है। आप जरा किसी नौजवान से पूछिये तो कि आपके जीवन का उद्देश्य क्या है? आपको भगवान ने अगर जीवन दिया है, दुर्लभ जीवन दिया है और भारत में दिया है, जहाँ देवता भी जन्म लेने के लिए तरसते हैं। ऐसे भारतवर्ष के अंदर मनुष्य का जीवन, मनुष्य की योनी मिलने के पश्चात आपका संकल्प क्या है? आपका लक्ष्य क्या है? नौजवान बता नहीं पाएगा। आप भी जरा विचार कीजिए कि आप इतना सारा समय इतना परिश्रम किसलिए करते हैं। रात भर सपने भी देखते होगें। आपके मन में क्या गूंजता है? आप क्या सोचते हैं? आप क्या चाहते हैं? बाबू मूलचन्द जी सब क्षेत्रों में रहने के बाद भी, राजनीति में रहने के बाद भी, विधायक–सांसद रहने के बाद भी, मंत्री रहने के बाद भी, उनकी कृति बिगड़ी क्यों नहीं? क्योंकि उनके मन में कुछ संकल्प था, उद्देश्य था, ध्येय था, उसी कृति की सबसे बड़ी आवश्यकता आज है।

ऐसी विडंबना हुई कि मैं एक कैंप के अंदर कुछ कॉलेज के विद्यार्थियों के साथ बैठा था। तब मैने कॉलेज के विद्यार्थियों से पूछा कि आप कॉलेज में पढ़ते हैं, आपको अगर कोई शक्ति ऐसी मिल जाए, कोई आराध्य देवी प्रकट हो जाए और आप से प्रसन्न होकर कहे कि मांग लो जीवन में क्या चाहते हो, तो आप क्या माँगोगे? जो आपके मन आता है वही माँगोगे। दो–चार मिनट तक तो किसी ने कोई उत्तर नहीं दिया। फिर एक कॉलेज के विद्यार्थी ने, जो एक गाँव का रहने वाला था, हिम्मत की और बोला कि ऐसी कोई शक्ति सामने आकर खड़ी हो जाए और कहे माँगो क्या चाहिए तो मैं तो ये माँगूगाँ कि हे देवी! मुझे तो एक थाने का थानेदार बना दे। यह उसकी इच्छा थी। आप भी जो राजनीति के क्षेत्र में काम करते हो आपके सामने ऐसी शक्ति आकर खड़ी हो जाए तो आप क्या माँगोगे? आप भी तो यही माँगोगे न कि मुझे MLA का टिकट मिल जाए और MLA बन गए तो मंत्री बन जाएं।

मैने उस विद्यार्थी से पूछा कि तू थानेदार क्यों बनना चाहता है? उसने कहा कि मैं गाँव का रहने वाला हूँ और मैने थानेदार का रूतबा देखा है। मैने पूछा क्या है थानेदार का रूतबा? उसने कहा जिस थाने का वह थानेदार होता है उस थाने का पूरा क्षेत्र उसे नमस्कार करता है। जब भी कभी बाहर निकलेगा सड़क पर तो सब उसे नमस्कार करेंगे। और दूसरा उसका रूतबा यह है कि वह जब भी कुछ खरीदने बाजार में जाएगा तो जिस दुकान पर जाएगा उसे माल मिल जाएगा, पैसे नहीं देने पड़ेगें। और उस थानेदार की इतनी हिम्मत है कि उस थाने में चाहे जिसको बंद कर दे, चाहे जिसको छोड़ दे। अगर उसका इतना रूतबा है तो कोई शक्ति अगर ऐसी आ जाए, तो मैं तो यही कहूँगा कि हे देवी माँ! मुझे थानेदार बना दे।

क्या गलत कहा? गलत था क्या उसका उत्तर? कुछ गलत तो नहीं कहा। हम भी तो वही सोच रहे हैं। उसने थानेदार का रूतबा देखा होगा। आपने और किसी का रूतबा देखा होगा। तो आप और किसी का रूतबा देखकर वही बनना चाहते हैं। लेकिन देश के लिए कुर्बानी देने वाले का सपना किसके पास है? और अगर 125 करोड़ लोगों का यह

सपना नहीं है तो ये 125 करोड़ लोग देश की शक्ति नहीं, देश की बर्बादी हैं, जिन्हें संभालना बहुत कठिन है।

देश के प्रधानमंत्री जी कहते हैं कि अगर एक आदमी एक कदम आगे जाएगा तो देश कितने कदम आगे जाएगा? 125 करोड़ कदम आगे जाएगा। लेकिन 125 करोड़ कदम आगे तो तब जाएगा जब हर एक आदमी एक कदम आगे तो जाए। अगर 125 करोड़ में से 75 करोड़ एक कदम आगे जाने की बजाय एक कदम पीछे जाएं तब क्या होगा? कुछ ऐसे भी हो सकते हैं जो न आगे जाएंगे न पीछे, वहीं खड़े रहेगें, तब क्या होगा? और इसलिए सबसे बड़ा सवाल यह है कि हमारे जीवन में हमारी कृति क्या है? स्वर्ग सब जाना चाहते हैं लेकिन स्वर्ग जाने के लिए जो कर्म है वह कोई नहीं करना चाहता। फिर आप स्वर्ग कैसे जाएंगे? आप जो कुछ भी प्राप्त करना चाहते हैं उसके लिए जो कर्म है वह अगर आप नहीं करेंगे तो कैसे पाएंगे? और यह कृति क्यों नहीं होती? इसलिए नहीं होती कि देश के प्रति, देश की मर्यादा के प्रति, देश के सम्मान के प्रति, देश की संस्कृति के प्रति, देश में रहने वाले व्यक्ति के मन में आस्था नहीं है। वह आस्था चाहिए।

एक बार संत कंफ्युसिश से उसके शिष्यों ने पूछा था कि एक राष्ट्र के लिए कम से कम कितनी चीजों की जरूरत होती है? संत ने कहा चार चीजों की जरूरत है। राष्ट्र की सुरक्षा के लिए सेना चाहिए और अंदर शान्ति की व्यवस्था के लिए पुलिस चाहिए। लोगों को खाने के लिए अन्न चाहिए, नहीं तो भूखों मर जाएंगे। और लोगों के मन में देश के प्रति आस्था चाहिए कि ये देश मेरा है। शिष्यों ने पूछा अगर इन चार में से कम करना हो तो आप किसे कम करेगें? संत ने कहा चार कम से कम चीजें पूछी थीं कम क्या करें? और अगर कम करना ही है तो सेना को कम कर देंगे। लोगों को कहेंगे कि सीमा पर आक्रमण हो तो खुद रक्षा करें। शिष्यों ने पूछा अगर इनमें से भी कम करना हो तो फिर आप किसे करेंगे? गौर करो संत कहते हैं कि फिर पुलिस को कम कर देगें। लोगों को कहेंगे कि नैतिकता से जीवन जीओ, अन्याय मत करो। क्या रह गया अब? पेट भरने के लिए अन्न और देश के प्रति आस्था। दो चीजें रह गईं। शिष्यों ने फिर पूछा अगर इनमें से भी कम करना हो तो फिर आप क्या करेगें? संत क्या बोलता है कि अगर अन्न और आस्था में से किसी को कम करना है तो भूखों मरना पसंद करेंगे मगर आस्था नहीं छोड़ेंगे।

देश स्वतंत्र तो हो गया लेकिन देश में रहने वालों के मन में आस्था की कमी है। वह आस्था लाने की जरूरत है। बिना आस्था के थोड़े ही स्वतंत्रता का संग्राम चला। 90 वर्षों तक स्वतंत्रता का संग्राम चला। स्वतंत्रता का संग्राम 1857 से शुरू हुआ और 1947 में समाप्त हुआ। कितने लोगों ने आस्था की लड़ाई लड़ी और देश की स्वतंत्रता लिए कुर्बान हुए। जिस महापुरूष की हम जन्म शताब्दी मना रहे हैं वे डॉ0 रामजी सिहं से बड़े थे। हम उनकी जन्म शताब्दी मना रहे हैं और ये 90 वर्ष के बैठै हैं। लेकिन मेरी समझ में नहीं आता कि दोनों के दोनों–बाबू मूलचंद जी भी और डॉ0 रामजी सिहं भी देश की स्वतंत्रता के लिए उस शासन में जेल में गए जब देश स्वतंत्र नहीं था और 1975 में भी

जेल गए जब देश स्वतंत्र था। कारण यह है कि देश स्वतंत्र होने के बाद भी स्वतंत्रता पूरी नहीं मिली। क्रान्ति पूरी नहीं हुई। वह अधूरी क्रान्ति थी। 1947 में जब हम स्वतंत्र हुए तो डॉ0 संपूर्णानंद जी ने कहा था कि क्रान्ति पूरी नहीं मिली है। अभी तो लोगों के दिल में क्रान्ति चाहिए। लोगों के दिलों में परिवर्तन चाहिए। अंग्रेज गए हैं, अंग्रेजियत नहीं गई है। लोगों की सोच वही है। और जब तक अंग्रेजियत नहीं जाती, जब तक लोगों के मन में स्वतंत्रता और देश के प्रति आस्था नहीं जगती तब तक पूरी की पूरी स्वतंत्रता हमें नहीं मिलती, यह अधूरी है। स्वतंत्रता अधूरी होने का परिणाम क्या है? परिणाम यह है कि देश के स्वतंत्र होने से पहले भी हम जेल में गए और देश स्वतंत्र होने के बाद 1975 में भी हम में जेल में गए। आज भी स्थिति वही है।

लेकिन उसको दूर करने के लिए मनुष्य के दिल और दिमाग को बदलने की जरूरत है। शराब के ठेके बंद करने से काम नहीं होगा, शराब न पीने का संकल्प लेना होगा। समाज मे बहुत सी बुराईयाँ हैं और वे मनुष्य के द्वारा पैदा होती हैं। आप अगर ठेका बंद भी कर देगें तो लोग चोरी से पीएँगें, बाहर से लाकर पीएगें, देशी शराब बनाएँगें। इसलिए मूल सकारात्मक परिवर्तन यह है कि लोगों के मन को बदला जाए, उनकी सोच बदली जाए। उस कविता के माध्यम से बेटी आस्था ने यही तो कहा है कि हम स्वतंत्र तो हो गए पर हमारी सोच तो बदली ही नहीं। सोच तो वैसी की वैसी ही है। इसलिए सोच बदलने की जरूरत है। जब तक आप सोच नहीं बदलेगें, मन को नहीं बदलेगें, कृति में सुधार नहीं करेगें, राष्ट्र के प्रति आस्था नहीं जगाएगें, जो वास्तव में मानव जीवन के मूल नियम हैं, वे मूल नियम आप अपने जीवन व अपने संस्कारों में नहीं लाएंगे तब तक कानून से काम नहीं होगा। आप क्या कानून से भ्रष्टाचार को रोक सकते हैं, अपराध को रोक सकते हैं? कानून से नहीं रूकेगा। लेकिन कानून बनाना जरूरी है ताकि डर पैदा हो।

महात्मा गाँधी यही कहते थे कि जो आदमी नैतिकता का पालन करता है उसे डंडे की क्या जरूरत है? उसके लिए पुलिस की क्या जरूरत है? वह खुद ही अनुशासित है, खुद ही नैतिकता का पालन करता है। लेकिन सबके सब समाज में ऐसे नहीं होते हैं। कुछ अनैतिक भी होते हैं, अपराधी भी होते हैं और ऐसे लोगों के लिए तो डंडे की ही जरूरत है। वे डंडे से ही ठीक होगें। लेकिन डंडा कम से कम हो। A best Government is that which governs the least. एक अच्छी सरकार वह है जिसको शासन करना ही नहीं पड़ता। अच्छा गांव वह है जिसमें थाना तो है लेकिन थानेदार और पुलिस दिनभर बैठकर मक्खी मारते रहते हैं, कोई शिकायत करने ही नहीं आता। ऐसा सदाचार, ऐसी नैतिकता जब लोगों में आएगी तब वास्तव में देश स्वतंत्र होगा। और यही कारण था कि जिस तरह की सोच, जिस तरह का विचार बाबू मूलचंद जी का था उसका अनुसरण करने की आज भी जरूरत है।

बहुत सी बातें आज हम सब को मिली हैं। समय बहुत हो गया और इतने समय में आज हमें जो सामग्री दी गई है उस पर हम विचार करेगें और विचार करके आगे बढेगें।

स्वतंत्रता सेनानी जिस उद्देश्य से काम करके गए वह काम पूरा होगा और स्वतंत्रता भी पूरी मिलेगी।

अब यहाँ बैठे प्रकाश जैन की पुस्तक में मैने कुछ पंक्तियाँ पढीं जिसमें लिखा था–

वफा जमाने में देखने को नहीं मिलती, वफा जमाने में देखने को नहीं मिलती, पुराने दौर के लोगों को याद करना है मुझे।

मतलब पुराने जमाने के लोगों में वफा थी परंतु आजकल के लोगों में नहीं है। इसलिए परिवर्तन लाने की जरूरत है। जब हम इस तरह के महापुरूषों की जयंतियाँ, जन्म शताब्दियाँ, पुण्य तिथियाँ मनाते हैं तो ये जरूर इस प्रकार का संदेश देंगी जिसकी आज हम सबको और राष्ट्र को आवश्यकता है।

धन्यवाद!